रीढ़ की हड्डी

प्रश्न-अभ्यास
(पाठ्यपुस्तक से)

1. रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद बात-बात पर "एक हमारा ज़माना था ..." कहकर अपने समय की तुलना वर्तमान समय से करते हैं। इस प्रकार की तुलना करना कहाँ तक तर्कसंगत है?

उत्तर यह मनुष्य का स्वाभाविक गुण है कि वह बीते हुए समय को ज्यादा अच्छा बताता है। गोपाल प्रसाद और रामस्वरूप भी 'हमारा जमाना था...' कहकर अपने समय को अधिक अच्छा बताने की कोशिश करते हैं। वास्तव में उनकी इस तुलना को तर्कसंगत नहीं कहा जा सकता है। हो सकता है कि कुछ बातें उस समय में अच्छी रही हों पर सारी बातें अच्छी रही हों यह भी संभव नहीं। जो बातें अच्छी थीं वे भी तत्कालीन समाज की परिस्थितियों में खरी उतरती होंगी पर बदलते समय के अनुसार वे सही ही हो यह आवश्यक नहीं। हर समाज की आवश्यकताएँ समयानुसार बदलती रहती हैं। जैसे पहले स्त्रियों को पढ़ाना भले आवश्यक न समझा जाता रहा हो पर आज स्त्रियों की शिक्षा समाज की आवश्यकता बन चुकी है। इसी तरह आज की बातें आज के परिप्रेक्ष्य में अच्छी है और तत्कालीन समाज के लिए वे बातें अच्छी रहीं होंगी। इस प्रकार उनके द्वारा की गई तुलना तर्कसंगत नहीं है।

2. रामस्वरूप का अपनी बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाना और विवाह के लिए छिपाना, यह विरोधाभास उनकी किस विवशता को उजागर करता है?

उत्तर उमा के पिता रामस्वरूप, आधुनिक विचारों वाले तथा शिक्षा के समर्थक हैं। वे अपनी पुत्री उमा को बी.ए. तक पढ़ाते हैं। उसके विवाहयोग्य होने पर जब वे योग्य वर की तलाश करते हैं तब वही शिक्षा राह का रोड़ा बन जाती है। पेशे से वकील तथा समाज में उठने-बैठने वाले गोपाल प्रसाद और बी.एस.सी. कर मेडिकल कॉलेज में पढ़ने वाला उनका बेटा शंकर दोनों ही कम पढ़ी-लिखी बहू चाहते हैं। उन्हें दसवीं पढ़ी बहू ही चाहिए। अधिक पढ़ी-लिखी लड़की उन्हें पसंद नहीं। अपनी बेटी की शादी के लिए रामस्वरूप इस बात को (उमा का बी.ए. पास होना) छिपा जाते हैं। उनके आचरण का यह विरोधाभास उनकी विशेषता को प्रकट करता है कि आधुनिक समाज का सभ्य नागरिक होने के बावजूद उन्हें रूढ़िवादी लोगों के दबाव में झुकना पड़ रहा है।

3. अपनी बेटी का रिश्ता तय करने के लिए रामस्वरूप उमा से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कर रहे हैं, वह उचित क्यों नहीं है?

उत्तर अपनी बेटी के रिश्ते के लिए रामस्वरूप उमा से जिस व्यवहार की अपेक्षा कर रहे थे वह कहीं से उचित नहीं था। वे चाहते थे कि उमा लड़के वालों (गोपाल प्रसाद और शंकर) के सामने सज-धजकर जाए तथा अपनी बी.ए. पास होने की बात छिपाकर दसवीं पास होना बताए। वे चाहते हैं कि उमा वैसा ही आचरण करे जैसा लड़के वाले चाहते हैं। आज समाज में लड़की-लड़के को समानता का दर्ज़ा दिया जाता है। लड़कियाँ किसी भी क्षेत्र में लड़कों से पीछे नहीं हैं। अतः लड़की कोई वस्तु या मूक जानवर नहीं है कि किसी के इशारे पर कार्य करे। उसका भी अधिकार है कि जिसके साथ उसे जीवनभर रहना है उसके बारे में जाने। उसकी रुचियों, पसंद-नापसंद का भी सम्मान किया जाना चाहिए।

4. गोपाल प्रसाद विवाह को 'बिज़नेस' मानते हैं और रामस्वरूप अपनी बेटी की उच्च शिक्षा छिपाते हैं। क्या आप मानते हैं कि दोनों ही समान रूप से अपराधी हैं? अपने विचार लिखें।

उत्तर आधुनिक विचार रखने वाले तथा शिक्षा के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण रखने वाले रामस्वरूप ने बेटी को उच्च शिक्षा दिलवाई कि उच्च शिक्षा प्राप्त उनकी बेटी का विवाह अत्यंत आसानी से हो जाएगा, पर अंततः उन्हें अपनी सोच बदलनी पड़ी। उधर गोपाल प्रसाद वकील होकर भी रूढ़िवादी विचारों वाले व्यक्ति हैं। उनका मानना है कि उच्च शिक्षा प्राप्त लड़की घर के लिए अच्छी नहीं होती। इसलिए रामस्वरूप गोपाल प्रसाद की अपेक्षाकृत कम अपराधी हैं क्योंकि परिस्थितियों से विवश होकर उन्होंने झूठ बोला। हालाँकि झूठ बोलना भी अपराध है। अगर कोई किसी कारण मजबूरी में चोरी करता है, तो क्या वह चोर नहीं कहलाएगा, क्या वह अपराधी नहीं होगा? निश्चित रूप से अपराधी ही कहलाएगा। इस तरह दोनों ही अपराधी हैं।

5. "...आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं..." उमा इस कथन के माध्यम से शंकर की किन कमियों की ओर संकेत करना चाहती है?

उत्तर "...आपके लाड़ले बेटे की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं..." के माध्यम से उमा शंकर की निम्नलिखित कमियों की ओर संकेत करना चाहती है–

(*i*) गोपाल प्रसाद उमा की शिक्षा, उसके गुण, चाल-ढाल तथा खूबसूरती के विषय में बार-बार जानना चाहते हैं, पर अपने बेटे के बारे में तनिक भी ध्यान नहीं देते हैं।

(*ii*) गोपाल प्रसाद मेडिकल कॉलेज की पढ़ाई कर रहे अपने बेटे को बहुत होशियार समझते हैं, पर वास्तव में ऐसा नहीं है।

(*iii*) शंकर का चरित्र भी बहुत अच्छा नहीं है। लड़कियों के होस्टल का चक्कर लगाते हुए पकड़ा गया था।

(*iv*) उसमें (शंकर में) आत्मविश्वास की कमी है।

(*v*) वह झुककर चलता है। उसकी शारीरिक बनावट भी कुछ अच्छी नहीं हैं।

6. शंकर जैसे लड़के या उमा जैसी लड़की–समाज को कैसे व्यक्तित्व की ज़रूरत है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर समाज को उमा जैसे व्यक्तित्व की जरूरत है। उमा चरित्रवान है। वह शिक्षित लड़की है। उसके पिता रामस्वरूप, गोपाल प्रसाद से उमा की शिक्षा की बात छिपा जाते हैं परंतु गोपाल प्रसाद के पूछने पर वह अपनी शिक्षा के बारे में दृढ़तापूर्वक बता देती है। इसके विपरीत शंकर स्वयं तो उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा है, परंतु वह नहीं चाहता है कि उसकी पत्नी भी उच्च शिक्षा प्राप्त हो। अतः समाज को शंकर जैसे व्यक्तित्व की जरूरत नहीं है। शंकर जैसे व्यक्तित्व से हमें न अच्छे समाजोपयोगी स्वस्थ विचारधारा वाले नागरिक मिलेंगे और न ही इनसे समाज और राष्ट्र की उन्नति में योगदान की अपेक्षा की जा सकती है। वास्तव में समाज को उमा जैसे साहसी, स्पष्टवादीनी तथा उच्च चरित्र वाले व्यक्तितत्व की आवश्यकता है।

7. 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर जिस प्रकार मानव शरीर में रीढ़ की हड्डी (बैकबोन) अत्यंत महत्वपूर्ण अंग होता है, जिसके अभाव में या कमजोर होने पर व्यक्ति सीधा खड़ा भी नहीं हो सकता है। व्यक्ति को सीधा खड़ा होने के लिए रीढ़ की हड्डी की मजबूती आवश्यक है। उसी प्रकार समाज में नारी को 'रीढ़ की हड्डी' जैसा महत्त्वपूर्ण स्थान है। समाज में नारी को उचित स्थान न मिल पाना, समाज की 'बैकबोन' को कमजोर करता है। नारी की उन्नति तथा समाज में उचित स्थान दिए बिना समाज मजबूत नहीं हो सकता है। उमा के विवाह के लिए रामस्वरूप जो रिश्ता तय करते हैं उस लड़के (शंकर) की कमर भी झुकी रहती है। उसकी शारीरिक बनावट भी बहुत अच्छी नहीं दिखती। ऐसा लगता है कि उसकी बैकबोन (रीढ़ की हड्डी) झुकी हुई है। इसके अलावा शंकर के चरित्र की कमजोरी को भी रीढ़ की हड्डी न होने की बात कह कर उभारा गया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक पूर्णतया सार्थक है।

8. कथावस्तु के आधार पर आप किसे एकांकी का मुख्य पात्र मानते हैं और क्यों?

उत्तर कथावस्तु के आधार पर निःसंदेह उमा ही इस एकांकी का मुख्य पात्र है। वास्तव में इस एकांकी में रामस्वरूप, गोपाल प्रसाद शंकर तथा उनका नौकर तथा महिला पात्रों में प्रेमा तथा उमा हैं। इनमें से रामस्वरूप तथा गोपालदास एकांकी के अधिकांश भाग में उपस्थित रहते हैं, किंतु इनमें से कोई भी चारित्रिक रूप से आकर्षित नहीं कर पाता है। रामस्वरूप परिस्थितियों के अधीन हो समझौता कर लेते हैं तो गोपाल प्रसाद में अनुकरणीय चरित्र या गुणों का अभाव दिखता है। शंकर दोहरे व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है। उसमें समाजोपयोगी तथा समाज का आदर्श व्यक्ति बनने की योग्यता नहीं है। इनमें उमा बी.ए. पास सुशिक्षित लड़की है जो चरित्रवान, साहसी, अपनी बात को दृढ़तापूर्वक कहने वाली है। वह अपनी तथा समाज में नारियों की सम्मानजनक स्थिति के लिए चिंतित दिखती है। एकांकी के कम अंश में उपस्थित रहने पर भी वही मुख्य पात्र है।

9. एकांकी के आधार पर रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

उत्तर 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद दोनों ही पुरुष पात्रों में प्रमुख हैं। वे एकांकी के अधिकांश भाग में उपस्थित रहते हैं। उनके चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

रामस्वरूप–इस एकांकी के प्रमुख पुरुष पात्र हैं। वे आधुनिक विचारों को महत्त्व देने वाले तथा उच्च शिक्षा के समर्थक हैं। वह अपनी बेटी उमा को बी.ए. तक पढ़ाते हैं। वे उसके विवाह को लेकर चिंतित दिखते हैं। वे गोपाल प्रसाद के पुत्र शंकर से उसकी शादी तय करते हैं। वह गोपाल प्रसाद की मनोवृत्ति जानकर उमा की शिक्षा की बात छिपाते हुए परिस्थितियों से समझौता कर लेते हैं।

गोपाल प्रसाद–पेशे से वकील हैं पर शिक्षा के मामले में दोहरी राय रखते हैं। वे उच्च शिक्षा लड़कों के लिए तथा लड़कियों के लिए कम शिक्षा के पक्षधर हैं। वे शादी जैसे मामले को भी बिजनेस मानते हैं। वे दहेज की लालच में अपने मेडिकल की पढ़ाई कर रहे बेटे का विवाह कम पढ़ी-लिखी लड़की से भी करने को तैयार हो जाते हैं।

10. इस एकांकी का क्या उद्देश्य है? लिखिए।

उत्तर 'रीढ़ की हड्डी' नामक एकांकी के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

(*i*) समाज में लड़कियों को कम सम्मान मिल पाने की समस्या को समाज के सामने लाना।

(*ii*) लड़कियों के विवाह में आने वाली समस्या को समाज के सामने लाना।

(*iii*) लड़कियों के विवाह के समय उनकी पसंद-नापसंद, रुचि आदि को महत्तव न दिया जाना।

(*iv*) लड़कियों के विवाह के समय उनके माता-पिता को दबाया जाना तथा उन्हें अनुचित समझौता करने पर विवश किया जाना।

(*v*) समाज के उन लोगों को बेनकाब करना जो शिक्षा के प्रति दोहरी मानसिकता रखते हैं।

(*vi*) उन लोगों की मानसिकता को उजागर करना जो लड़कियों को समाज में सम्मानजनक स्थान नहीं देना चाहते हैं।

11. समाज में महिलाओं को उचित गरिमा दिलाने हेतु आप कौन-कौन से प्रयास कर सकते हैं?

उत्तर समाज में महिलाओं को उचित गरिमा दिलाने हेतु हम निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं–

(*i*) हमें महिलाओं को हीन दृष्टि से नहीं देखना चाहिए।

(*ii*) महिलाओं को उचित सम्मान देना चाहिए तथा ऐसा करने के लिए दूसरों को भी प्रोत्साहित करना चाहिए।

(*iii*) स्त्री-शिक्षा में हमें योगदान देना चाहिए।

(*iv*) उनके मान-सम्मान को ध्यान में रखकर अश्लील हरकतें न करें तथा ऐसा करने वालों को हतोत्साहित करें।

(*v*) अपने समय की महान तथा विदुषी स्त्रियों का उदाहरण समाज में प्रस्तुत करना चाहिए।

(*vi*) लड़के और लड़कियों की तुलना करते हुए उन्हें कभी हीन नहीं समझना चाहिए।

(*vii*) लड़कियों की पढ़ाई-लिखाई तथा खान-पान पर ध्यान देना चाहिए जिससे वे उच्च-शिक्षा प्राप्त कर स्वस्थ हो सके।

(*viii*) उन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

कुछ और प्रश्न

I. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रामस्वरूप अपने घर को किस प्रकार सजा रहे हैं और क्यों?

उत्तर रामस्वरूप अपने घर को तरह-तरह से सजाने में लगे हैं। वे तख्त पर दरी बिछाकर चादर बिछवाते हैं। कमरे में रखे गुलदस्ते साफ करते हैं। तख्त पर कुछ वाद्य-यंत्र रखवाते हैं। कुर्सियों की धूल साफ कराते हैं तथा मेजपोश भी ठीक कराते हैं। वे कमरे को साफ-सुथरा इसलिए बनाना चाहते हैं क्योंकि उनकी शादी योग्य बेटी उमा को देखने के लिए लड़के वाले, आने वाले हैं।

2. रामस्वरूप बैठक के कमरे में वाद्य-यंत्रों को क्यों रखवाते हैं?

उत्तर रामस्वरूप की बेटी उमा को देखने लड़के वाले आने वाले हैं। वे कमरे की साफ-सफाई कराकर तख्त पर सितार और हारमोनियम भी रखवाते हैं। ऐसा वे इसलिए करते हैं ताकि लड़के वाले यह जान सकें कि उमा को संगीत का भी ज्ञान है और वह संगीत के बल पर लड़के और उसके पिता को प्रभावित कर सके। वैसे भी उमा का स्वर मधुर है और वह गीत गाती है।

3. गोपाल प्रसाद एम.ए. से बेहतर किसे मानते हैं और क्यों?

उत्तर गोपाल प्रसाद अपने जमाने के मैट्रिक-पास व्यक्ति को आजकल के एम.ए. पास वालों से बेहतर मानते हैं। उनके इस कथन से यह प्रतीत होता है कि वे अपने समय के पढ़े-लिखों को अच्छा समझते हैं। उनके मन में आज के युवकों की पढ़ाई के प्रति तिरस्कार की भावना भरी है। ऐसा करके वे आजकल के युवाओं पर दबदबा बनाना चाहते हैं।

4. गोपाल प्रसाद के विचार आधुनिक समाज के लिए कहाँ तक घातक हैं?

उत्तर गोपाल प्रसाद के विचार आधुनिक समाज के लिए तनिक भी उचित नहीं हैं। वह लड़कियों की पढ़ाई का पक्षधर नहीं बल्कि विरोधी है। उसका कहना है कि लड़कियों का पढ़ना-लिखना, काबिल बनना आवश्यक नहीं है। उसके अनुसार लड़कियों को घर का काम कुशलतापूर्वक आना चाहिए। यदि लड़कियाँ पढ़-लिखकर योग्य बन गईं और अंग्रेज़ी अखबार पढ़कर पॉलिटिक्स की बातें करने लगीं तो घर की देखभाल हो चुकी। उसकी यह सोच लड़कियों के लिए ही नहीं, बल्कि समाज के लिए भी बहुत घातक है।

5. क्या गोपाल प्रसाद लड़के-लड़कियों को समान दृष्टि से देखता है? स्पष्ट करें।

उत्तर गोपाल प्रसाद की सोच समाज के लिए हितकर नहीं है। वह लड़के तथा लड़कियों को समान दृष्टि से नहीं देखता है। वह तरह-तरह के तर्क देकर लड़के-लड़कियों में अंतर बताकर दूसरों को उकसाता है। उसका मानना है कि लड़कों को पढ़ना-लिखना चाहिए, काबिल बनना चाहिए जबकि लड़कियों को पढ़ना-लिखना आवश्यक नहीं है क्योंकि उन्हें घर ही तो चलाना है। अपनी बात के प्रमाण में वह कहता है कि मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं, शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।

6. उमा का गायन अचानक क्यों रुक गया? जबकि इसी गायन से वह लड़के वालों को प्रभावित करना चाहती थी?

उत्तर रामस्वरूप, शंकर और उसके पिता को प्रभावित करने के लिए उमा से कुछ गाने के लिए कहते हैं। सितार बजाते हुए उमा गायन शुरू करती है। गायन चल रहा था कि अचानक उसकी नज़र सामने बैठे शंकर पर पड़ी। शंकर पर नजर पड़ते ही वह समझ गई कि यह तो वही शंकर है जो उसके (लड़कियों) हॉस्टल के बाहर आवारा की तरह घूमता रहता था। उमा साहसी तथा स्पष्टवादिनी है। उसे अपने व्यक्तित्व के सामने शंकर का व्यक्तित्व बौना लगा, इसलिए ऐसे लड़के के सामने गाना उसे अपमानजनक लगा और उसका गायन रुक गया।

7. 'कलसों से नहाता था, लोटों की तरह।' इस कथन द्वारा कौन, क्या कहना चाहता है?

उत्तर रामस्वरूप का नौकर रतन वास्तव में काम कम करता है, बोलता अधिक है। रतन की हँसी का मजाक उड़ाते हुए रामस्वरूप कहते हैं कि उन्होंने अपनी जवानी में बहुत काम किया। जब वह युवा थे तब खूब कसरत करते थे। कसरत के बाद कलसे से पानी शरीर पर यूँ डालते थे, मानो लोटे से नहा रहे हों। इस कथन के द्वारा एक ओर वे जहाँ अपनी युवावस्था का बखान करना चाहते हैं वहीं रतन को अधिक काम करने के लिए प्रेरित करना चाहते हैं।

II. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. उमा ने गोपाल प्रसाद के साथ जो व्यवहार किया, आपके विचार से वह कितना उचित है, लिखिए?

उत्तर गोपाल प्रसाद समाज के उन लोगों का प्रतीक है जिनकी सोच समाज के लिए हितकर नहीं है। ऐसे लोग नारी जाति को मात्र उपभोग की वस्तु समझते हैं वे स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी होते हैं। उनके विचार से यदि नारी पढ़-लिख गई तो अपने अधिकारों के प्रति सजग हो जाएगी।

उमा द्वारा गोपाल प्रसाद के साथ किया गया व्यवहार बिल्कुल उचित है। स्त्री और पुरुष समाज के अंग हैं। दोनों बराबर हैं। उमा शिक्षित युवती है जो अपना हित-अहित समझती है। नारी के विरुद्ध ऐसी सोच रखने वाले को लताड़कर उमा ने ठीक ही किया।

2. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी के आधार पर शंकर की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का पात्र शंकर, गोपाल प्रसाद का पुत्र है। उसकी शादी उमा नामक बी.ए. पास लड़की से होनी है। शंकर दुर्बल चरित्र वाला आवारा किस्म का युवक है।

शंकर का अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है। उसके अपने विचार नहीं हैं, वह किसी बात पर टिका नहीं रह सकता है। वह वही करता है जो उसके पिता कहते हैं। वह पढ़ा-लिखा होकर भी पढ़ी-लिखी लड़की को महत्त्व नहीं देता है। आत्मविश्वास की कमी के कारण वह उपहास का पात्र बनकर रह गया है।

3. सिद्ध कीजिए कि उमा के कथन में लड़कियों की पीड़ा प्रकट होती है।

उत्तर उमा, रामस्वरूप की बी.ए. पास विवाह योग्य पुत्री है। उसे देखने शंकर नामक युवा अपने पिता गोपाल प्रसाद के साथ आता है। गोपाल प्रसाद अधिक पढ़ी-लिखी बहू नहीं चाहता है। वह तरह-तरह से उमा की जाँच-पड़ताल करता है, जिससे उमा को गहरी ठेस पहुँचती है। उमा की आँखों पर चश्मा लगा देखकर वह उमा की उच्च शिक्षा का अनुमान कर लेता है और तरह-तरह की बातें करता है। उमा द्वारा यूँ अपनी तोल-मोल किया जाना अपमानजनक लगता है। वह दुखी होती है और कहती है कि वह मेज-कुर्सी से भी बदतर है क्योंकि खरीदने वाला मेज-कुर्सी से कोई प्रश्न तो नहीं करता है। बस उन्हें मोल-भाव कर खरीद लिया जाता है। ऐसा आदमी जो लड़कियों को भेड़-बकरियों के समान समझता है, खुद कसाई के समान है। वह अपनी ऊँची पढ़ाई को भी जायज ठहराती है। इस प्रकार उसके कथन में लड़कियों की पीड़ा है।

मूल्यपरक प्रश्न

1. उमा ने समाज की अन्य लड़कियों के लिए उदाहरण प्रस्तुत किया है। 'रीढ़ की हड्डी' पाठ के आधार पर बताइए कि लेखक ने उसके किन-किन मूल्यों का आँकलन किया है?

उत्तर उमा बी.ए. पास, सिलाई-कढ़ाई, पाक-कला, संगीत में निपुण लड़की है। उसके पिता लड़के वालों से उसी उच्च शिक्षा की बात छिपाना चाहते हैं, जिसका उमा विरोध कर सच्चाई सबके सामने प्रस्तुत कर देती है। उसके मूल्यों का आँकलन निम्नलिखित है–

1. **स्पष्टवादिनी होना**–उमा स्पष्टवादिनी है। वह निःसंकोच भाव से सच्चाई को बता कर समाज की अन्य लड़कियों के लिए अनुकरण प्रस्तुत करती है।
2. **रूढ़िवादिता का विरोध**–उमा इस बात का कड़ा विरोध करती है कि उच्च शिक्षा केवल लड़कों के लिए ही है, लड़कियों के लिए नहीं। वह अन्य रूढ़ियों का भी विरोध करती है।
3. **आत्मविश्वास से भरपूर होना**–उमा आत्मविश्वास से भरी है। यही आत्मविश्वास उसे शंकर जैसे लड़के से श्रेष्ठतर सिद्ध करता है।
4. **दृढ़ निर्णय लेने में सक्षम**–उमा दृढ़ निर्णय लेने में सक्षम है। इसी कारण वह अपने पिता, शंकर और उसके पिता के सामने अपना निर्णय सुना देती है।